Hindi Subject

OUT COME

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

प्रथम वर्श/सेमेस्तर–1/कोर–1

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आदिकाल, मक्तिकाल एवं रीतिकाल

ईकाई–1 हिन्दी साहित्यतिहास लेखन परंपरा :– हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन परम्परा संस्कृत के समाप्ति होने लगी तब से हिन्दी साहित्यतिहास लेखन परम्परा का आरंभ हुआ। इतिहास–लेखन और इतिहास दृश्टि को रखने वाला यह पहला ग्रंथ है। यह व्यवस्थित रीति से लिखा गया है। यह ग्रंथ काल क्रम के अनुसार वर्गीकरण करके लिखा गया है। इसकी सर्वप्रथम विषेशता यह है कि इसमें काल विषेश की प्रवृतियों को स्पश्ट किया गया है। जार्ज ग्रियर्सन के अतिरिक्त मिश्रबन्धु विनोद, डॉ0 रामकुमार वर्मा का इतिहास, डॉ0 हजारी प्रसाद, द्विवेदी का इतिहास इस लेखन परम्परा को लिखा है। सबसे पहले अपभ्रंष रचना ही प्रकाषित हुई। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंष की रचनाओं को हिन्दी माना है और अपभ्रंष को उत्कृश्ट कवि स्वयंमू को हिन्दी का प्रथम सर्वोत्तम ग्रंथ कहा गया महापंडीत राहुल सांस्कृन्यायन को हिन्दी–काव्यद्यारा में भी कई जैनेतर कवियों की अपभ्रंष रचनाएँ संकलित है। इस प्रकार हम देखते हैं कि दसवीं षताब्दी से ही हिन्दी साहित्य की परम्परा का प्रारंभ माना जाना चाहिए।

इस काल को मुख्य उद्देष्य यह है कि किस प्रकार हिन्दी की उत्पति हुई अपभ्रंष फुटी हिन्दी के रूप में प्रचारित हुआ और धीरे–धीरे

यह विकास करते हुए वर्तमान काल में खड़ी बोली हिन्दी के रूप में प्रसारित है।

ईकाई–2 काल विभाजन, सीमाकंन नामकरण – इसे अध्यन करने को मुख्य उद्देष्य यह है कि किस काल में कैसी रचना हुई है जैसे आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिककाल। इन चार भागों में बाँटकर यह बताया जाता है कि आदिकाल को वीरगाथा काल बोला जाता है इसमें कवि लोग अपने आश्रयदताओं की वीरता का वर्णन करते थे और राजाओं के द्वारा ही उनका भरण पोशण होता था। आदिकाल के प्रथम कवि चंदबरहाई थे जिन्होंने पृथ्वी राज रासो काव्य की रचना किया था। इसमें विध्यापति भी कवि हुए जिन्होने आश्रय दाताओं के साथ ही साथ भक्तिपरख भी रचना किए जिसमें षिव आराधना, दुर्गा आराधना गंगा स्तुति आदि है।

इसके उपरान्त मक्तिकाल का प्रारंभ हुआ देष में जब मुस्लिम षासकों का प्रभुत्व स्थापित हो गया तब स्वाभाविक ही वीरगाथाकालीन भावना षनैःषनैः अन्याचार भी बढ़ने लगा। साथ ही कवियों को अब राज–दरवारों से हटकर साधुओं की कुटियों में आश्रय लेना पड़ा और अधिकांष कवि आश्रयदाताओं का गुणगान करने की अपेक्षा भगवान का कीर्तिगान करने में संलग्न हो गए।

इसे पढ़ाने का मुख्य उद्देष्य है कि इस प्रकार साहित्य में सामाजिक परिवर्तन के साथ काव्यधारा में भी परिवर्तन होता है क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है।

रीतिकाल :– हिन्दी के रीतिकालीन साहित्य की सामाजिक तथा ऐतिहासिक पृश्ठभूमि पर दृश्टिपात करने से हमें मालुम होता है कि यह बड़ी अव्यवस्था का युग था इस काल को श्रृंगार काल भी कहा जाता है।

इसे अध्यन करने का मुख्य उद्देष्य यह है कि किस प्रकार, साहित्य में परिवर्तन आता है क्योंकि परिवर्तन संसार का नियम है जो गीता का मुख्य अंष है।

आधुनिक काल :– आधुनिक काल को गध्यकाल भी कहा जाता है इस समय हिन्दी खड़ी बोली के रूप में रूपान्तरित हो गया जो प्रगतिवाद प्रयोगवाद, छायावाद नई कविता की ओर अग्रसर होता गया जो आज के समय में एक नई दिषा दे रही है।

इसका उद्देष्य यह है कि आज हिन्दी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई। आज देष में सभी कार्य हिन्दी में हो रहा है चाहे वह प्रषासन का क्षेत्र हो या राजनीतिक क्षेत्र हो या बैंकिग का क्षेत्र हो आज यह साहित्यिक भाशा के साथ साथ कार्यालयी भाशा के रूप में अग्रणीय भूमिका निभा रही है। यह सीमाकंन निम्नलिखित पंक्तियों में है :–

आदिकाल –	1050 से 1300
भक्तिकाल –	1300 से 1700
रीतिकाल –	1700 से 1900
आधुनिककाल –	1900 से आज तक

करने का तात्पर्य है कि उपर्युक्त तालिका बताने का उद्देष्य यह है कि किस प्रकार हिन्दी धीरे–धीरे अपनी उद्देष्य की पूर्ति करते हुए

हिन्दुस्तान (भारत) का राश्ट्रभाशा के रूप में परिवर्तित हो गई है और आज इसका प्रचार और प्रसार हो रहा है। इसमें पत्रकारिता भी प्रचलित है।

हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृश्ठभूमि प्रवृतियों एवं सिद्धनाथ और जैन साहित्य :– हिन्दी साहित्य का आदिकाल को वीरगाथा काल कहा जाता है।

सिद्ध साहित्य :– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी भक्तिकाल पर सिद्धों के प्रभाव को स्वीकार करते हैं।

नाथ साहित्य :– नाथपंथियों ने संयम और त्याग की वृति को अपनाना इसका उद्देष्य त्याग है।

जैन साहित्य :– जैन धर्म में अहिंसा, त्याग, करूणा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अतः इस दृश्टि से यह हिन्दु–धर्म के अधिक समीप है इसका उद्देष्य अंहिसा मुख्य रूप में है।

भक्तिकाल :– भक्तिकाल एवं रीतिकाल (पृश्ठभूमि प्रवृतियाँ एवं काव्य धाराएँ) भक्तिकाल पृश्ठभूमि प्रवृतियाँ एवं काव्य धाराएँ भक्ति पर आधारित है इसकी प्रवृतियाँ मुख्य रूप में भक्ति भावना पर थी और काव्यधाराएँ भी भक्तिपूर्ण थी। इसका उद्देष्य यह है कि हमें मानवता और वसुधैव कुटुम्बकम एवं अतिथि देवों भव पर चलने के लिए कहता है।

रीतिकाल :– इस काल को श्रृंगार काल कहा गया जो अष्लीलता जान पड़ता है लेकिन श्रृंगार को प्रधान रस माना गया है और रस काव्य की आत्मा होती है जिसमें आनंद की प्राप्ति

होती है। मनुश्य का प्रधानगुण आनंद की प्राप्ति है जो प्रकृति का नियम है।

स्नातक हिन्दी, प्रतिशठा

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 1/कोर–2

आदिकालीन, भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन कविताऐं–

1. **अमीर खुसरो :–** अमीर खुसरो ने दौहे, मुकरियाँ गीत लिखें जो आज भी प्रासंगिक है प्रत्येक दृश्टिकोण से ये आदिकाल के कवि है।
2. **विध्यापति :–** विध्यापति आदिकाल के कवि हैं जो कृश्ण भक्ति, दुर्गा भक्ति, षिवभक्ति गंगास्तुति किया जो आज भी प्रासंगिक है। इसका उद्देष्य आज के दिनों में भी देखा जाता है जो धर्म से सम्बन्धित है।
3. **कबीरदास :–** कबीरदास ने सामाजिक चेतना को जगाया, गुरू महिमा बताया।

    गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काको लागुँ पाँव।
    बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।
    मसि कागद छुओ नही
    कलम गहयौ नहीं हाथ
    जगत व्यवहार, भक्ति भावना यही इसका उद्देष्य है।

4. **तुलसीदास :–** तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना किया जो आज भी घर–घर में पूज्यनीय है।

5. **सूरदास :–** सूरदास ने राधा और कृश्ण की भक्ति किया जो आज भी प्रासांगिक है आज भी प्रचलित है असत्य पर सत्य की विजय दिखाई गई यही इसका उद्देष्य है–

''सूर सूर तुलसी षषी'' संयोग–वियोग

मेरे मन अनत कहाँ सुख पावै, जैसे उड़िजहाय के पंछी, फिर जहाय पर आवैं। (भक्ति भावना उद्देष्य है)

6. **बिहारी लाल :–** बिहारी लाल रीतिकालीन कवि है जिन्होंने एक बात कहकर दोहरा मार करते थे इसलिए इनके विशय में कहा गया है कि –

सतसैया के दोहरे अरूनावक के तीर।
देखन में छोटन लगे घाव करें गंभीर।।

इन्होने श्रृंगार और भक्ति परख दौहे भी लिखे। बिहारी लाल जयसिंह के दरवार में पहुँच कर जयसिह को कर्तव्य की राह पर लाया। जयसिंह नई रानी के विलास में इतने खो गये थे कि बिहारी लाल ने निम्नलिखित दोहे को लिखकर भेजाः–

नहीं पराग नहीं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सौं विध्यों आगे कौन हवाल

इस दोहा से बिहारी चौंक गए और प्रजा की देखभाल में लग गए। इन्होंने राधा कृश्ण के भक्ति परख दोहे भी लिखे।

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाई परै स्याम हरित दुति होय।।

धनानंद :– धनानंद को सूजान नाम के वेष्या से प्रेम था लेकिन उनके द्वारा अच्छा व्यवहार नहीं करने के कारण धनानंद कवि बन गऐ। कहा गया है कि –

वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान।
निकलकर नयनो से चुपचाप बही होगी कविता अनजान।

इन्होंने राधा–कृश्ण की भक्ति किया। भक्त कवि श्रृंगार को भक्ति भाव में पूर्णतः डुबाकर भक्तिमय कर देता है। इन्होने संयोग एवं वियोग का होने का वर्णण किया है। इन्होने वान्सल्य भक्ति, मधुर भक्ति, साख्य भक्ति, दास्य भक्ति को दिखाया जो आज भी प्रासंगिक है। यही इसका उद्देष्य है।

स्नातक हिन्दी, प्रतिशठा

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 1/ळम्.1 एलेक्टिव

जनसंचार

ईकाई–1 जनसंचार – अवधारणा, महत्व, भारत में जनसंचार का उदभव और विकास

ईकाई–2 जनसंचार के विविध माध्यम मुद्रित, श्रव्य एवं दृष्य

ईकाई–3 जनसंचार और भाशा का अंतः संबंध

ईकाई–4 जनसंचार की भाशा : मुद्रित श्रव्य एवं दृष्य

1. जनसंचार की अवधारणा मनुश्य के उत्पति के साथ हुई जिसमें इषारा के द्वारा जनसंचार किया जाता है। इसका महत्व इसलिए है कि बिना जनसंचार के कुछ भी काम नहीं

किया जा सकता है भारत में जनसंचार आदिकाल से है और धीरे धीरे इसका विकास होता गया।

2. जनसंचार के विविध माध्यम है मुद्रित, श्रव्य और दृष्य। इसका उद्देष्य है कि पेपर पत्रिका पढ़ना (मुद्रित माध्यम) श्रव्य रेडियो है जिसमें हम समाचार सुनते हैं।

   इसके अतिरिक्त दृष्य माध्यम में सिनेमा, नाटक टी0वी0, आदि आता है जिसके माध्यम से हम सब कुछ जानते हैं।

   इसका उद्देष्य मनुश्य को जागरूक करना है।

3. जनसंचार और भाशा का अंत संबंध पारस्वरिक है। दोनों का अन्योन्याश्रय संबंध है एक के बिना दुसरा नहीं रह सकता है।

4. जनसंचार की भाशा मुद्रित, श्रव्य एवं दृष्य :– जनसंचार मुद्रित भी होता है, श्रव्य के द्वारा भी होता है।

स्नातक हिन्दी जनरल

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 1/कै. 1।

हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. हिन्दी साहित्यतिहास लेखन परम्परा
2. काल विभाजन, सीमांकन, नामकरण
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल
   (पृश्ठभूमि एवं प्रवृतियाँ सिद्धनाथ और जैन साहित्य)
4. मध्यकाल : भक्तिकाल एवं रीतिकाल
   (पृश्ठभूमि, प्रवृतियाँ एवं काव्यधाराऐं)

प्रथम पृश्ठ पर अंकित है।

स्नातक हिन्दी जनरल

कला एवं वाणिज्य

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 1/

डण्ण्ऽ रू भ्प्छक्

विध्या, भाशा एवं व्याकरण परिचय

खण्ड –क

ईकाई–1 हिन्दी गध्य–पध्य का सामान्य परिचय–परिभाशा तत्व, विषेशतायें।

क) उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी

ख) कथाकाव्य– महाकाव्य, खंडकाव्य

ग) मुक्तक – गेयमुक्तक, अयेयमुक्तक, छंहकाव्य

खण्ड–ख

ईकाई–2 भाशा और व्याकरण का सामान्य परिचय

क) भाशा की परिभाशा एवं विषेशताएँ

ख) व्याकरण की परिभाशा एवं महत्व, भाशा और व्याकरण का अंतः संबंध

ग) ध्वनि– हिन्दी के विविध वर्ण एवं भेद, मात्रायें संधि और समास, परिभाशा एवं भेद

उपन्यास :– मानव चरित्र पर प्रकाष डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मुख्य उद्देष्य है उपन्यास की विषेशता :–

1. कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र चित्रण

3. कथोपकथन

4. देषकाल अथवा वातावरण या परिवेष

5. भाशा षैली

6. उद्देष्य

कोई लेखक उपन्यास तभी लिखता है जब वह किसी कथा किन्हीं पात्रों और उनके जीवन रहस्यों में जिनका परिचय या तो उसमें हुआ है या जिनका उदय जीवन के अनुभवों के आधार पर उसकी कल्पना में हुआ है अतः उद्देष्य उपन्यास का एक आवष्यक और महत्वपूर्ण तत्व है। इसके माध्यम से उपन्यासकार मानवीय जीवनधारा का प्रवाह दिखलाना चाहता है।

इस तरह उपन्यास वह कथात्मक रचना है जिसमें हमारे जीवन जगत के यथार्थ को सामने लाया जाता है।

कहानी – कहानी कहने और सुनने की प्रवृति का विकाष इसलिए हुआ क्योंकि इसमें कथात्मक रसानुभूति होती है यह इसकी सबसे बड़ी विषेशता है। यह एक और मनोरंजन का साधन बनती है तो वहीं दूसरी ओर पाठक की चेतना का संचार करती है। यही इसका उद्देष्य है।

कहानी साहित्य की वह कथात्मक विधा है, जो अपनी लधुता में व्यापक विचार चेतना और भावों का समाहर रखती है। इसे इस तरह कहा जा सकता है कि कहानी अपेक्षाकृत छोटी वह कथात्मक प्रस्तुति है जिसमें समय और समाज की झलक मिलती है।

नाटक– नाटक वह विधा है जो अपने विविध तत्वों की रंगमंचीय प्रस्तुति कर साहित्य में सबसे अलग पहचान बनाता है नाटक की संरचना में रंगमंच की भूमिका का विषेश महत्व होता है। इसकी रंगमंचनीयता ही इसे लोकप्रिय बनाती है तथा लोक ग्राह्य बनाती है। सच पुछा जाय तो नाटक आदिकाल से चला आ रहा प्राचीन विधा है लेकिन हिन्दी में इसकी षुरूवात आधुनिक काल से हुई है।

एकांकी – एकांकी एक अंक की होती है। इसकी कथा में ऐसी सधनता होती है कि एक ही अंक में पूर्णता का एहसास कराती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि एक ही अंक में पूर्ण कथा की वह विधा जिसका मंचन किया जा सके। एकांकी नाटक का स्वरूप लिये हुए साहित्य की वह विधा है जो अपने विविध तत्वों की रंगमंचीय प्रस्तुति कर अलग पहचान बनाती है। आज आदमी के पास समय का आभाव है, इसलिए वह अधिक समय लगने वाला नाटक की अपेक्षा एकांकी का दर्षक बनना पंसद करता है।

महाकाव्य :– महाकाव्य के आधार स्वरूप दो चरित्र प्रसिद्ध है – राम और कृश्ण। ये दोनों लोककल्याण को लेकर प्रसिद्ध हुए है। यही प्रसिद्ध भारतीय महाकाव्य का आधार स्तम्भ बनी हुई है। रामायण से लेकर साकेत और महाभारत से लेकर कुरूक्षेत्र इसका उदाहरण है।

खंडकाव्य :– खण्डकाव्य एक देष या एक अंष या एक प्रधान धटना का अनुसरण करता है। खण्डकाव्य का उद्देष्य सामान्य नहीं विषेश रहता है। इसमें देष की संस्कृति और संस्कार दोनो का परिचय मिल जाता है।

खंड काव्य पंचवटी है।

मुक्तक :— मुक्तक षब्द का अर्थ होता है अपने आप में सम्पूर्ण।

गेय मुक्तक :— गेय मुक्तक का अर्थ है जिसे गाया जा सके।

अगेय मुक्तक :— अगेय मुक्तक जिसे गाया न जा सके जिसे पढ़ा जा सके।

छंद काव्य :— अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रागणना तथा यति—गति से सम्बद्ध विषिश्ट नियमों से नियोजित पदरचना छंद कहलाता है।

भाशा की परिभाशा एवं विषेशताएँ :— भाशा वाक—ध्वनियों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति है।

भाशा और व्याकरण का अंत सम्बन्ध :— भाशा और व्याकरण दोनों एक दुसरे के पूरक है। भाशा व्याकरण की सामग्री है व्याकरण से षुद्ध—षुद्ध बोलना, षुद्ध—षुद्ध लिखना और षुद्ध—षुद्ध पढ़ना आता है।

ध्वनि :— निकलती हुई प्राणवायु में जब स्वरतंत्रिया को बाधा डालती है तो उसमें ध्वनि निकलती है।

हिन्दी के विविध वर्ण एवं भेद :— वर्ण दो प्रकार के होते है—1) स्वर, 2) व्यंजन

संधि और समास :— दो वर्णों के मेल में जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते है।

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

समास :– जब दो पद अपनी–विमक्ति को छोड़कर आपस में मिल जायं तो इस मिलने की क्रिया को समास कहते हैं।

जैसे–गंगा का जल – गंगाजल

राजा की पुत्री– राजपुत्री

राजा का भवन – राजभवन आदि

भेद :– सात भेद है।

अव्यमीभाव, नन, द्विगु, द्वंद्व, तत्तपुरूश, कर्मचाारय, बहुब्रीहि

डण्ण्स् हिन्दी व्याकरण और सम्प्रेशण

ईकाई–1. क) हिन्दी व्याकरण एवं रचना, संज्ञा सर्वनाम विषेशण, क्रिया

ख) उपसर्ग, प्रत्यय, समास, विलोमषब्द, अनेक षब्दों के एक षब्द, पल्लवन, संक्षेपण

ईकाई–2 क) संम्प्रेशण की अवधारणा एवं महत्व, सम्प्रेशण की प्रक्रिया, सम्प्रेशण के माध्यम

ख) सम्प्रेशण के प्रकार :–

क) मौखिक और लिखित

ख) व्यक्तिक और सामाजिक

सम्प्रेशण के बढ़ते चरण

क) सूचना समाज

ख) व्यक्तिक, सामाजिक

सम्प्रेशण के बढ़ते चरण में अखबार, रेडियों इन्टरनेट, टी0वी0 विडियो सेट आदि

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

प्रथम वर्श/सेमिस्टर–2/कोर–3

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आधुनिक काल

1. नवजागरण, पूनर्जागरण एवं आधुनिकता
2. भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग, प्रवृतियाँ
3. छायावाद एवं प्रगतिवाद
4. हिन्दी गाध्य का विकाष

1. **नवजागरण :–** नवजागरण में लोगों को फिर से जागरण गया

पूनर्जागरण – पूनर्जागरण में लोगों को फिर से जागया गया।

रावेहुँ मिलि के आवहुँ भारत भाई।
हा, हा भारत दुर्दषा देखी ना जाई।
पै धन विदेष चलि जात इहै अतिख्वारी।।
हा हा भारत दुर्दषा देखी न जाई।

आधुनिकता – राश्ट्र प्रेम की भावना
समाज की दुर्दषा का चित्रण

भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग –भारतेन्दु युगीन प्रवृतियाँ राश्ट्र के प्रति भक्ति भावना श्रृंगारिकता, भक्तिभावना, प्रकृति चित्रण, रहस्य व्यंग्य की प्रधानता, समस्या पूर्ति ब्रंज भाशा का प्रयोग

द्विवेदी युग :– प्रवृतियाँ, राश्ट्रीयता की भावना, आदर्षवाद एवं नैतिवता, प्रकृति चित्रण, सामाजिक समस्याओं का चित्रण अनुवाद की प्रवृति काव्य रूपों की विविधता, काव्य, छंद वैविध्य

2. **छायावाद –** महादेवी वर्मा, सुमित्रनंदन पंत्र जयषंकर प्रसाद सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

3. **प्रगतिवाद :–** प्रगति पर विचार किया गया क्योंकि छायावाद के वाद प्रगतिवाद आता है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

प्रथम वर्श/सेनिस्टर 2/कोर–4

हिन्दी नवोन्मेश काव्य

हिन्दी नवोन्मेश काव्य में हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल भारत के इतिहास के बदलते हुए स्वरूप से प्रभावित है। स्वतंत्रता संग्राम और राश्ट्रीयता का भावना का प्रभाव साहित्य में भी आया भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था इसमें भारतेन्दु हरिष्चन्द्र, मैथली षरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेद्री, सुभद्रा कुमारी चौहान, बाल कृश्ण षर्मा, नवीन, मोहन लाल, आदि कवि थे।

आधुनिक काल 1850 से हिन्दी साहित्य के इस युग में भारत में राश्ट्रीयता के बीज अंकुरित होने लगे थे। स्वतंत्रता संग्राम लड़ा और जीता गया। छापेखाने की आविश्कार हुआ, जनसंचार के विभिन्न साधनों का विकास हुआ, रेडियो, टी0वी0 व समाचार पत्र हर घर का हिस्सा बने, षिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार

बना। काव्य में छायावादी युग, प्रगतिवादी युग, प्रयोगवादी युग, नयी कविता युग, साठोत्तरी कविता इन नामों से जाना गया।

स्नातक हिन्दी जेनरल

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 2/ळम्.2/ एलेक्टिव

प्रयोजन मुलक हिन्दी

प्रयोजन मूलक हिन्दी की अवधारणा स्वरूप और इसके विविध क्षेत्र हैं। इसमें परिभाशिाक षब्दवालियाँ समस्या एवं समाधान भी और प्रषासनिक पत्राचार ज्ञापन टिप्पणी आवेदन निविदा, अधिसूचना आदि है। प्रयोगजन मूलक हिन्दी इसी उद्देष्य में पढ़ा जाता है। प्रयोजन का अर्थ ही होता है प्रयोजन जिसके अन्तर्गत विभिन्न कार्य होता है।

स्नातक हिन्दी जेनरल

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 2/कै़ 1ठ

हिन्दी साहित्य का इतिहास

आधुनिक काल

इसके अन्तर्गत आधुनिक काल का पृश्ठभूमि आती है इसमें भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग की प्रवृतियाँ आती है। इसके छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कहानी का सामान्य परिचय आती है। हिन्दी गद्य की विविध विधायें का सामान्य परिचय भी इसके अन्तर्गत आता है।

(कला एवं वाणिज्य)

प्रथम वर्श/सेमिस्टर 2/

डण्ण्स्ए भ्छक्

काव्य अध्यन एवं व्याकरण

2 युनिट

खंड–क

1. रष्मि रथी रामधारी सिंह दिनकर।

इस पुस्तक का नाम रष्मि रथी इसलिए पड़ा क्योंकि इसका अर्थ पुण्य का है। इस काव्य में (रष्मि रथी) नाम कर्ण का है क्योंकि उसका चरित्र अत्यन्त पुण्यमय और प्रोज्ज्वल है।

2. व्यावहारिक व्याकरण :–

षब्दभेद – व्यूत्पति और रचना की दृश्टि से षब्द भेद होती है। इसमें संज्ञा, सर्वनाम विषेशण क्रिया अव्यय षब्द निर्माण, उपसर्ग एवं प्रत्यय, उद्वाहरण एवं अभ्यास है। व्यावहारिक व्याकरण पढ़ने से षुद्ध–षुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होता है।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

द्वितीय वर्श /सेमिस्टर 3/कोर 5

छायावादी एवं प्रगतिवादी काव्य

छायावादी कवि :– जय षंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व इसमें सभी कवि ईष्वर पर विष्वास एवं प्रकृति मित्रण किया करते थे

और प्रगतिवादी काव्य में नागार्जुन केदारनाथ अग्रवाल हैं जिसमें प्रगति पर कविता लिखी गई है।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर–2 /कोर–6

प्रयोगवाद : नयी कविता

इस कोर विशय के प्रयोग करके कविता लिखी जाती थी इसकी उपरान्त नयी कविता का निर्माण हुआ।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 3/कोर–7

भारतीय काव्य षास्त्र

दोशरहित, गुणसहित ओर यथासंभव अंलकार युक्त षब्द तथा अर्थ को काव्य कहते हैं। इसके अतिरिक्त रसात्मक वाक्य काव्य हैं तथा रमणीय अर्थ का प्रतिवादन करनेवाला षब्द काव्य हैं। भारतीय काव्यषास्त्र पढ़ाने का यहीं उद्देष्य होता है।

स्नातक हिन्दी जेनरल

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 3/क्ैण्ब्ण् 2ब्

भारतीय काव्य षास्त्र

यही पाठ्यक्रम सेमिस्टर 3/कोर–7 में यही भारतीय काव्य षास्त्र आती है।

स्नातक हिन्दी जेनरल

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर ळम्म् 3 /एलेक्टिव

पाष्चात्य दार्षनिक चिंतन एवं साहित्य

पश्चात्य दार्षनिक चिंतन एवं साहित्य में अभिव्यंजनावाद क्रोचे और उनका अभिव्यंजनावाद। इसमें मार्क्सवाद की अवधारणा, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्सवाद का विकास हिन्दी के, मार्क्सवादी आलोचक आदि आते है। इसमें कल्पना, बिव, फंटेसी : अवधारणा, महत्व एवं काव्य में प्रयोग आता है। इसमें मिथक एवं प्रतीक योजना भी आती है।

स्नातक हिन्दी जेनरल (कला एवं वाणिज्य)

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 3

डण्ण्स्ण् भ्छक् गद्य अध्यन एवं व्याकरण

हिन्दी गध्य इसमें पढ़ाया जाता है जो गध्य से अपना संबंध रखता है इसमें कहानी, निबंध आता है और व्याकरण में लिंग, वचन, कारक, संधि और समास मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ संधि समास, मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ अपठित गध्यांष संक्षेपण, पल्लवन आती है।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

द्वितीय वर्श सेमिस्टर 4/कोर–8

हिन्दी कथा साहित्य

हिन्दी उपन्यास व कहानी की अवधारणा एवं विकास निर्मला–प्रेमचंद कितने चौराहे–फणीष्वर नाथ रेणु हिन्दी काव्य काव्यधारा कोल्हान विष्वविद्यालय द्वारा प्रहत है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 4/कोर–9

हिन्दी, नाटक एवं एकांकी

हिन्दी नाटक रंगमंचीय होता है जिससे दर्षक प्रभावित होते हैं। इसमें चन्द्रगुप्त नाटक आता है इसके अतिरिक्त एकांकी भी आता है। एकांकी एक अंक का होता है। इसमें चारू मित्रा, डॉ0 रामकुमार वर्मा अधिकार का रक्षक उपेन्द्रनाथ अष्व, सीमारेखा विधु प्रभाकर तथा आवास का नीलाम–डॉ0 धर्मवीर भारती आदि है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 4/कोर–10

हिन्दी आलोचना एवं निबंध

हिन्दी आलोचना तो एक व्यंग्य है जो साहित्य का मुख्यधारा है। इसके अतिरिक्त निबंध है। निबंध का अर्थ होता है बाँधना। किसी भी षीर्शक को ठीक ढंग से बाँधना ही निबंध है।

स्नातक हिन्दी जेनरल

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 4/ळम्.4 /ऐलेक्टिव

संपादन प्रक्रिया और साज सज्जा

संपादन प्रक्रिया और साज सज्जा आती है। इसमें संपादकीय में संपादक अपनी भाशा में सम्पादन करते हैं। इसका उद्देष्य यह होता है कि सम्पादक किस प्रकार की समीक्षा करते हैं। इसे समीक्षात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के बात बतायी जाती है।

स्नातक हिन्दी जेनरल

द्वितीय वर्श/सेमिस्टर 4/कै.2क

प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रयोजनमूलक हिन्दी मुख्य रूप से प्रयोजन से अर्थ रखता है। इसे बताने का उद्देष्य होता है कि कोई कार्य के पीछे कोई न कोई कारण होता है हिन्दी भी पढ़ने की कोई न कोई योजना होती है। इसके संदर्भ में यही कहा जा सकता है कि बिना प्रयोजन के कोई कार्य नहीं होता है यही इसका निश्कर्श है।

स्नातक हिन्दी जेनरल द्वितीय वर्श सेमिस्टर–4

डण्ण्स्ण् भ्फ्छक्

प्रहसन, निबंध एवं व्याकरण

खण्ड–क

1. हिन्दी प्रहसन एवं निबंध लेखन

   अँधेर नगरी – भारतेन्दु हरिष्चन्द्र

   निबंध लेखन – 300 षब्दों में

खण्ड–ख

2. व्यावहारिक रचना

1) प्रत्राचार – आवेदन पत्र सम्पादक के नाम पत्र

2) वाक्य के अंग – उद्देष्य एवं विद्येय, वाक्य के भेद

3) षब्द एवं वार्क्यगत अषुद्धियाँ

1) प्रहसन का अर्थ होता है हँसना निबंध का अर्थ है बाँधना और व्याकरण का अर्थ होता है षुद्ध–षुद्ध बोलना या षुद्ध–षुद्ध लिखना।

2) व्यावहारिक रचना

पत्राचार आवेदन पत्र या सम्पादक के नाम से पत्र लिखना होता है यह विध्यार्थियों को सिखाया जाता है। वाक्य के संदर्भ में बताया जाता है। वाक्य में अषुद्धियाँ बताई जाती हें

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

तृतीय वर्श/सेमिस्टर–5/कोर–11

हिन्दी–भाशा

1) हिन्दी भाशा का उदभव और विकास

2) हिन्दी भाशा के विविध रूप

3) हिन्दी भाशा की षब्द संपदा

4) आधुनिक तकनीकी विकास और हिन्दी

हिन्दी भाशा का उदभव 1050 ई0 में हुआ और उसके बाद धीरे–धीरे विकास करते हुए आज खड़ी बोली हिन्दी के रूप में प्रचालित हुआ हिन्दी भाशा के विविध रूप है तकनीकी भाशा कार्यालयी भाशा, साहित्यिक भाशा है हिन्दी भाशा की षब्द संपदा

आज विकसित रूप में है आज तकनीक क्षेत्र में विकास किया है आज सभी क्षेत्र में हिन्दी–प्रचालित है।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

तृतीया वर्श / सेमिस्टर 5 / कोर–12

जनसंचार

1. जनसंचार : अवधारणा महत्व भारत में जनसंचार का उदभव और विकास
2. जनसंचार के विविध माध्यम मुद्रित श्रव्य और दृष्य
3. जनसंचार और भाशा का अंत सम्बन्ध
4. जनसंचार की हिन्दी मुद्रित श्रव्य एवं दृष्य

जनसंचार की अवधारणा आदिकाल से हुई है इसका महत्व गज जाहिर है अगर जनसंचार नहीं होती तो हमारा कोई काम नहीं हो सकता है भारत में जनसंचार का उदभव और विकास आदिकाल में है जनसंचार का माध्यम मुद्रित श्रव्य और दृष्य भी है जो अखबार रेडियों और सीनेमा के रूप में प्रचालित है। जनसंचार और भाशा का अंत सम्बन्ध में अन्योन्याश्रय संबंध में है। जनसंचार की हिन्दी मुद्रित श्रव्य एवं सभी रूपों में है।

स्नातक हिन्दी प्रतिशठा

तृतीया वर्श / सेमिस्टर–5

म्समबजपअमध्कै 1६ विषेश पत्र

खण्ड–क

1. रेखाचित्र ठकुरीबाबा महादेवी वर्मा
2. आत्मकथा – कथा भूलुँ क्या याद करूँ : हरिवंष राय बच्चन
3. व्यंग्य :– भेड और भेडिये : हरिषंकर परसाई
4. रिपोर्ताज – लाल कनेर के फूल : धर्मवीर भारती पाठ्य पुस्तकें

हिन्दी गद्यधारा हिन्दी विभाग, कोल्हान विष्वविद्यालय

खण्ड ख

प्रेमचंद

1. प्रेमचंद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
2. गबन : उपन्यास
3. कहानियाँ : पंच परमेष्वर, मंत्र, कपन, सदगति, ईदगाह
4. प्रेमचंद : कुछ विचार : कहानी : भाग–1 एवं भाग–2

उपर्युक्त पाठ्यक्रम में प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व बताया जाता है।

गबन उपन्यास में प्रेमचंद गबन के बारे में बताया है।

कहानियाँ में कहानी बताया गया है इसके बाद प्रेमचंद के विचार को प्रस्तुत किया गया है इसका मुख्य उद्देष्य प्रेमचंद के व्यक्तित्व के बारे में बताया जाना।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

तृतीया वर्श/सेमिस्टर–5

म्समबजपअमध्वैङ 2६ विषेश पत्र

खण्ड क और ख में से कोई एक

खण्ड क तुलसीदास

1. तुलसीदास – व्यक्तित्व और कृतित्व
2. विनय पत्रिका – पाँच पद, 5, 10, 45, 72, 78
3. कवितावली – उत्तर कांड पाँच छंद, 29, 35, 45, 67, 73
4. गीतावली पाँच पद – 7, 9, 10, 18, 24

खण्ड ख राश्ट्रीय काव्य धारा

1. अवधारणा एवं विकास
2. मैथली षरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व भारती वंदना, मातृभूमि
3. माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व पुश्प की अभिलाशा, कैदी और कोकिला
4. रामधारी सिंह दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व हिमालय किसको नमन करूँ

पाठ्य पुस्तक

1. हिन्दी गध्यधारा : हिन्दी विभाग, कोल्हान विष्वविद्यालय – राश्ट्रीय काव्यधारा के अन्तर्गत जितने भी कवि है वो सभी राश्ट्र से प्रेरित होकर कविता लिखे जो आज भी प्रासंगिक है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

तृतीय वर्श/सेमिस्टर–6/कोर–13

प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी अवधारणा, स्वरूप और इसके विविध क्षेत्र

2. प्रषासनिक प्रयोजनमूलक हिन्दी, परिभाशिक षब्दावालियाँ

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी : समस्या एवं समाधान

4. अभ्यास प्रषासनिक पत्राचार, ज्ञापन, टिप्पण, आवेदन, निविदा, अधिसूचना जो पूर्व में दी गई है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

तृतीय वर्श/सेमिस्टर–6/कोर–14

हिन्दी पत्रकारिता

1. हिन्दी–पत्रकारिता : अवधारणा, महत्व एवं प्रकार

2. हिन्दी–पत्रकारिता का उदभव विकास एवं चुनौतियाँ

3. समाचार संकलन एवं संपादन

4. संपादक एवं पत्रकार की अर्हतायें, सम्पादकीय का महत्व

पत्रकारिता को पाँचवा वेद कहा जाता है जिसके द्वारा हम ज्ञान विज्ञान सम्बन्धी बातों को जानकर अपने बंद गस्तिश्क को खोलते हैं। इसके संबंध में कहा जाता है कि :–

इस अंधियारे विष्व में दीपक है अखबार।
सुपथ दिखावे आपको, आँख करत है चार।।

सम्पादक एवं उसकी अर्हताये स्नातक होती है तथा ये समाचार की समीक्षा करते है।

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

तृतीय वर्श/कै 3६ विषेश पत्र

खण्ड क और ख में से कोई एक

क) विषेश पत्र – अनुवाद

1. अनुवाद : परिभाशा क्षेत्र एवं सीमायें।

2. अनुवाद का स्वरूप : कला या विज्ञान, अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त

3. अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि, विष्लेशण

4. अनुवाद के विविध रूप : साहित्यक अनुवाद कार्यालयी अनुवाद, भावानुवाद

5. अनुवाद की सार्थकता और प्रासंगिकता

ख) विषेश पत्र हिन्दी लोक (मौखिक) साहित्य

1. लोक साहित्य अवधारणा सामान्य परिचय लोक साहित्य और लिखित साहित्य

2. लोक साहित्य के विविध प्रकार – लोकगीत लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकोक्तियाँ

3. लोकगीत – स्वरूप विषेशताऐं एवं प्रकार संस्कार गीत, सोहर, विवाहगीत, देवगीत, ऋृतुसबंधी गीत

श्रम संबंधी गीत – रोपनी, कहनी, जँतसार, उन्सव गीत

4. लोक कथा एवं लोकगाथा : स्वरूप, विषेशताएँ एवं प्रकार

5. लोकनाट्य : स्वरूप, विषेशतायें एवं प्रकार

स्नातक हिन्दी प्रतिश्ठा

तृतीय वर्श/सेमिस्टर–6

म्सममबजपअमध्वैम्.4

लघु–षोध लेखन

इसमें षोध करने के लिए बताया जाता है। विधार्थियों को विशय दे दिया जाता है वह प्रतिशठा के स्तर से ही षोध करने की प्रक्रिया को अपनाते है। षोध प्रस्तुती बताया जाता है इसका मुख्य उद्देष्य विध्यार्थियों में षोध के प्रति रूचि और षोध करने की विधि सिखाया जाता है। यह आज भी प्रासगिक है इसलिए इसकी रचना प्रतिशठा स्तर से करायी जानी की योजना है। इससे विधार्थियों को पाठ लाभ मिलता है।